टिप्पणी

# 2

# ग्रंथालय, प्रलेखन और सूचना केन्द्र

## परिचय

पिछले पाठ में आपने ग्रंथालय की अवधारणा, इसके उद्देश्य, कार्यों और भूमिका के बारे में अध्ययन किया। क्योंकि सभी ग्रंथालय विशेष सेवा प्रदान नहीं करते इसी कारण प्रलेखन और सूचना केन्द्रों की आवश्यकता होती है।

इस पाठ में, हम पाठकों की विशेष सूचना-आवश्यकता को पूरा करने में ग्रंथालय, प्रलेखन और सूचना केन्द्रों की भूमिका के बारे में अध्ययन करेंगे। हम इस आधुनिक समय में डिजिटल ग्रंथालयों के महत्व को भी उजागर करेंगे।

## उद्देश्य

इस पाठ को पूरा करने के पश्चात आप सक्षम होंगे:

- ग्रंथालय, प्रलेखन और सूचना केन्द्रों को परिभाषित करने;
- इनके उद्देश्य और कार्य की व्याख्या करने;
- विभिन्न प्रकार के प्रलेखन और सूचना केन्द्रों को पहचानने; तथा
- डिजिटल, इलेक्ट्रोनिक और वर्चुअल ग्रंथालयों में अंतर स्पष्ट करने में।

## 2.1 ग्रंथालय

आरंभिक दिनों में ग्रंथालय को सिर्फ भंडार घर समझा जाता था, जहाँ पुस्तकों को संरक्षण के लिए अलमारियों में रखा जाता था। ग्रंथालयाध्यक्ष को उन पुस्तकों का संरक्षक समझा जाता था। पुस्तकों के खोने और क्षति पहुँचने के डर से पाठकों को ग्रंथालय जाने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता था। पाठकों को पुस्तकों तक जाने की अनुमति नहीं होती थी केवल ग्रंथालय कर्मी ही अलमारी से पुस्तक निकालकर पाठक को देते थे। किन्तु

टिप्पणी

आधुनिक ग्रंथालय एक सेवा-संस्था है, जिसमें प्रशिक्षित कर्मचारी इसके संग्रह के प्रयोग को प्रोत्साहन देते हैं। इसे हाइब्रीड ग्रंथालय कहा जाता है जिसमे मल्टीमीडिया संग्रह होता है, इस संग्रह को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है जो इस प्रकार हैं:

(अ) पठन-पाठन प्रक्रिया में सहायता करने तथा इसे आसान बनाने वाली सामग्री जैसे मैप (नक्शा), ग्लोब, प्रारूप (मॉडल), चित्र, पोस्टर, चार्ट नमूने, खेल, पहेलियाँ, मल्टीमीडिया किट आदि।

(ब) मुद्रित और गैर-मुद्रित सूचना स्रोत और इलेक्ट्रोनिक डाटाबेस जैसे कि संदर्भ स्रोत, माइक्रोफॉर्म, ऑडियो-वीडियो सामग्री, सीडी रोम और डीवीडी, ई-पुस्तकें और प्रभावी संदर्भ तथा सूचना सेवाएँ प्रदान करने के लिए ऑनलाइन जर्नल।

ग्रंथालय के संसाधनों और सेवाओं के प्रभावी प्रयोग के लिए पाठकों को आकर्षित करना यहाँ का मुख्य उद्देश्य है। क्योंकि ग्रंथालय मुक्त अभिगम देता है, इसीलिए पाठक स्वयं जाकर पुस्तक खोज सकते हैं और समान विषय की अन्य पुस्तकें भी देख सकते हैं। आधुनिक ग्रंथालय कंप्यूटरीकृत हैं। पाठक सभी मुद्रित और गैर मुद्रित सामग्री किसी भी विषय पर सिंगल विंडो द्वारा देख सकते हैं। ग्रंथालयाध्यक्ष पाठकों को नियमित आने के लिए प्रोत्साहित करता है और उनके अध्ययन और शोध में सहायता देने के लिए प्रभावी ग्रंथालय, सूचना एवं संदर्भ सेवा प्रदान करता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात्, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में शोध एवं विकास (आर एंड डी) क्रियाकलापों में अत्यधिक वृद्धि हुई। शोध एवं विकास के क्रियाकलापों में इज़ाफा होने के फलस्वरूप प्रकाशनो में लगातार वृद्धि हुई और शोध परिणाम विभिन्न स्रोतों जैसे प्राथमिक सामयिकियाँ, शोध प्रबंध, सम्मेलन में प्रस्तुत आलेख, शोध प्रतिवेदन, एकस्व (पेटेंट), मानक (स्टैण्डर्ड) आदि रूपों में प्रकाशित होने लगे थे। विभिन्न स्रोतों के बीच सूचना के इतने बड़े पैमाने पर बिखरे होने के कारण शोध वैज्ञानिकों को अपने शोध क्षेत्र की प्रकाशित सामग्री को खोजने में कठिनाई होती है। जबकि, शोधार्थियों को ऐसी सूचना सेवा की आवश्यकता होती है जिसमें उनके विशेष क्षेत्र में उपलब्ध ज्ञान व्यवस्थित रूप में उन तक पहुँचे और नियमित अंतराल पर उनके ध्यान में आए। जैसा कि हम जानते हैं कि पारंपरिक ग्रंथालय इस सूचना सेवा को प्रदान नहीं कर सकते, इसी कारण इस सेवा को प्रदान करने के लिए 'विषय विशेषीकरण' आवश्यक है।

परिणाम स्वरूप, विशेष ग्रंथालय मुख्यत: वे विशेष ग्रंथालय जो विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र के होते है, 'प्रलेखन केन्द्र या सूचना केन्द्र' कहलाए जाते हैं। इस प्रकार सूचना संस्था की यह श्रेणी सामने आयी जोकि वैज्ञानिकों की सूचना आवश्यकता को पूरा करने के लिए स्थापित की गयी।

## पाठगत प्रश्न 2.1

**रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :**

1. उस व्यवस्था को जिसमें केवल कर्मचारी अलमारी से पुस्तक निकाल सकते हैं ..... ................. कहा जाता है।

टिप्पणी

2. ......................पठन-पाठन प्रक्रिया में सहायता करने एवं उसको आसान करने वाली सामग्री के उदाहरण हैं।
3. वह व्यवस्था जिसमें पाठक स्वयं शेल्फ से पुस्तक खोज सकते हैं ......................कही जाती है।
4. डी. वी. डी., ई-पुस्तकें और ऑनलाइन जर्नल......................सामग्री के उदाहरण हैं।

## 2.2 प्रलेखन केन्द्र

सभ्यता के विकास और विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में उन्नति के फलस्वरूप साहित्य में अत्यधिक वृद्धि हुई। बहु-विषयक विषयों में ज्ञान का विस्फोट न केवल समष्टि प्रलेखों में अभिलिखित जैसे पुस्तकें बल्कि नये प्रलेखों जैसे शोध साममिकियाँ, शोध एवं तकनीकी प्रतिवेदन, एकस्व (पेटैंट) मानक (स्टैण्डर्ड) और विशेषीकरण, सर्कुलर, रिप्रिंट आदि में भी छपता है। विशेष लोगों को न केवल समष्टि प्रलेखों बल्कि व्यष्टि प्रलेखों में छपी सूचना की भी आवश्यकता होती है जैसे- विभिन्न विषयक पत्रिकाओं एवं सामयिकियों में छपे अभिलेख।

### परिभाषाएँ

लिखित और मुद्रित रूप का वह अंश जो किसी विषय पर सूचना को प्रदर्शित करता है 'प्रलेख' कहलाता है। यह शब्दों, आवाज़ों या चित्रों के रूप में किसी सोच का रेखाचित्र रिकॉर्ड भी हो सकता है।

'प्रलेखन' शब्द एक प्रक्रिया है जोकि मुद्रित और गैर-मुद्रित स्रोतों में अभिलिखित बौद्धिक विषयवस्तु को पहचानने, उनको व्यवस्थित करने, उनके भंडारण और प्रसार से सम्बन्धित है।

'प्रलेखन केन्द्र' व्यष्टि रूपों में छपे साहित्य के संग्रह, उनके अभिकरण और सारकरण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे उनको पाठको के सामने लाते हैं और जिन पाठकों को इनकी आवश्यकता होती है उनको तुरंत प्रदान करते हैं। ये प्रलेखन केन्द्र स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित हैं।

### लक्ष्य और उद्देश्य

प्रलेखन केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य समसामयिक और नवीन साहित्य को विशेष पाठकों के ध्यान में लाना है। यह प्रलेखों की पहचान कर उन्हें अधिग्रहित तथा संगठित करता है और प्रलेखों का अनुक्रमीकरण और सारकरण करने के पश्चात् उनको व्यवस्थित करता है। पाठकों की माँग पर यह प्रलेखों का प्रसार करता है।

प्रलेखन सेवा संदर्भ सेवा के समान है किन्तु प्रलेखन सेवा में बड़े प्रलेखों के स्थान पर व्यष्टि प्रलेखों और सामान्य पाठकों के स्थान पर विशेष पाठकों पर ज्यादा महत्व दिया जाता है प्रलेखन सेवा में निम्न कार्यकलाप सम्मिलित है:

टिप्पणी

1. समसामयिक जागरूकता सेवा और चयनित सूचना प्रसार जैसी सेवाओं द्वारा समसामयिक सूचना पाठकों के समक्ष लाना।
2. प्रलेखन केन्द्र में उपलब्ध प्रलेखों को प्रदान करना।
3. दूसरे संस्थानो से अन्तर ग्रंथालय ऋण द्वारा प्रलेखों को मँगाना।
4. प्रलेखों को पुन: प्रदत्त करना और फोटोकापी सेवा प्रदान करना।
5. विदेशी भाषाओं के प्रलेखों को पाठकों द्वारा माँगी गई भाषा में अनुवाद करना।

## प्रलेखन केन्द्रों के प्रकार

1950 और 1960 के दौरान, स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर प्रलेखन केन्द्रों की स्थापना हुई।

(अ) 'स्थानीय प्रलेखन केन्द्र' संस्था को सूचना सेवा प्रदान करता है। ये पाठकों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाए जाते हैं।

(ब) 'राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र' शोध एवं विकास संस्थाओं, व्यवसायिक एवं ओद्योगिक संस्थाओं, सरकारी विभागों आदि से जुड़े होते हैं। ये केन्द्र उन क्रियाकलापों को करते हैं जो स्थानीय प्रलेखन केन्द्र नहीं कर सकते।

(स) अंतर्राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र, शोधार्थियों की सूचना आवश्यकताओं पूर्ति के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध होने वाले विशेष साहित्य को संगृहीत, व्यवस्थित और प्रसारित करते हैं।

(द) क्षेत्रीय प्रलेखन केन्द्र सामान्यत: किसी क्षेत्र में राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय रूप से स्थापित होते हैं। ये किसी विशेष क्षेत्र के पाठकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थापित किये जाते हैं।

1970 के अन्त और 1980 के आरंभ में प्रलेखन के स्थान पर सूचना पर अधिक ज़ोर दिया गया। यह सूचना स्रोतों एवं सेवाओं की विभिन्नताओं और इलेक्ट्रोनिक डाटाबेसों के अभिगम के कारण हुआ। डाटाबेसों तक दूर-दराज से भी अभिगम किया जा सकता है। परिणामस्वरूप, पाठकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बहुत से संगठन सामने आए, और प्रलेखों के स्थान पर सूचना पर ध्यान केन्द्रित किया गया जो उन प्रलेखों में होती थी। इसके अलावा, सूचना केन्द्र न केवल एक संगठन बल्कि दूसरे संगठनों के सूचना स्रोतों का अधिग्रहण करता है और पाठकों के लिए उपलब्ध कराता है। सूचना केन्द्र प्रकाशित और अप्रकाशित दोनों प्रकार की सूचनाओं की देखरेख करता है। अब प्रलेखन और सूचना दोनों शब्द एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।

टिप्पणी

## पाठगत प्रश्न 2.2

**निम्नलिखित का मिलान करें :**

| | |
|---|---|
| अ) स्थानीय प्रलेखन केन्द्र | (i) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चलाए जाते हैं। |
| ब) राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र | (ii) क्षेत्रीय पाठकों के लिए |
| स) अंतर्राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र | (iii) आर. एंड डी. संगठन वाणिज्यिक एवं ओद्यौगिक संगठन। |
| द) क्षेत्रीय प्रलेखन केन्द्र | (iv) पैतृक या मूल संगठन |

## 2.3 सूचना केन्द्र

सूचना केन्द्र ऐसे संगठन हैं जो (अ) सूचना का चयन, परिग्रहण, भंडारण और पाठकों की माँग पर इसको प्रदान करते है। (ब) सूचना का अभिसारकरण और अनुक्रमणीकरण करते हैं और (स) प्रत्याशा या सूचना की माँग पर सूचना का प्रसार करते हैं। ये सूचना केन्द्र विशेष शोध एवं विकास संगठन से जुड़े होते हैं। ये सूचना केन्द्र विभिन्न सूचना सेवाएँ प्रदान करते हैं जैसे रैफरल सेवा, साहित्य खोज, अनुवाद सेवा, ग्रंथसूची सेवा, सारकरण सेवा इत्यादि।

सूचना केन्द्रों के विभिन्न प्रकार हैं जैसे (अ) सूचना विश्लेषण केन्द्र (ब) क्लियरिंग हाउस (स) डाटा केन्द्र तथा डाटा बैंक

**(अ) सूचना विश्लेषण केन्द्रः** यह केन्द्र विशेष विषयक्षेत्र में उपलब्ध साहित्य का संकलन-संग्रह, उनकी उपयोगिता का मूल्यांकन और उनका सम्प्रेषण अनुसंधान में कार्यरत विशेषज्ञों को उनकी मांग व उनकी उपयोगितानुसार करते हें। ये केन्द्र संग्रहीत सूचनाओं की वैधता, विश्वसनीयता और शुद्धता का मूल्यांकन करने के पश्चात् ही उसका प्रसार करते हैं। इस प्रकार यह अनुसंधान में प्रबलता प्रदान करते हैं और ज्ञान में अंतर या उसमें त्रुटियों को उजागर करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

**(ब) क्लियरिंग हाउसः** क्लियरिंग हाउस या तो सहयोगी आधार पर या राष्ट्रीय अथवा अंतराराष्ट्रीय एजेंसी द्वारा स्थापित किए जाते हैं। विभिन्न स्त्रोतों, देशों और भाषाओं से उत्पन्न हुई सूचनाओं का एक ही केन्द्र से अभिगम प्रदान करते हैं। ये विशेष ज्ञान की शाखा की वाड्मय सूचियाँ बनाते हैं। और उनको सम्बद्ध रुचि रखने वाले संगठनों को परिसंचारित करते हैं। माँगे जाने पर उपलब्ध प्रलेखों की प्रति भी प्रदान करते हैं।

**(स) डाटा केन्द्र और डाटा बैंक :** डाटा केन्द्र उपयोगकर्ताओं के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए विशिष्ट विषयों से संबंधित संख्यात्मक आंकडों का संकलन, व्यवस्थापन और संग्रह करते हैं। ये उपयोगकर्ताओं के भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सूचनाओं का संकलन करते हैं। डाटा बैंक साधारणतया व्यापक विषय क्षेत्र से संबंधित

टिप्पणी

होते हैं। ये संकलित आकड़ों के स्रोतों और संबद्ध साहित्य से अपरिष्कृत आँकड़ों को एकत्रित करके उनका सार निकालते हैं। ये उपयोगकर्त्ताओं के प्रश्नों का उचित उत्तर देने के लिए संरचनात्मक ढंग से फाइल तैयार करते हैं।

इन केन्द्रों का प्रबंधन विषय विशेषज्ञों ग्रंथालयों और सूचना व्यवसायियों द्वारा होता है जो अनुरोध करने पर सूचनाओं का व्यवस्थापन, पुर्नप्राप्ति और उनका प्रसार करते हैं। इन केन्द्रों के कर्मचारियों में विभिन्नताएँ हो सकती हैं। ये अनुसंधान अधिकारी ग्रंथालयी, वाड्मयी या प्रशिक्षित सूचना अधिकारी हो सकते हैं। इनके कार्यो में विशिष्ट ग्रंथालय के कार्य और उनकी गतिविधियों का विस्तार, जिसमें उनके समानान्तर कार्यो जैसे तकनीकी लेखन, सारांशों, चयनित सूचनाओं का प्रसार और उपयोगकर्त्ताओं के लिए ग्रंथालय अनुसंधान शामिल हैं।

## 2.4 ग्रंथालय, प्रलेखन एवं सूचना केन्द्र में अन्तर

प्रलेखन/ग्रंथालय केन्द्र सूचना से कई प्रकार से भिन्न है। ग्रंथालय अपने उपयोगकत्ताओं को समष्टि प्रलेख प्रदान करते है जबकि सूचना केन्द्र सूक्ष्म प्रलेख प्रदान करते हैं। ग्रंथालय सूचना केन्द्र से विभिन्न प्रकार के प्रलेखों के संग्रह उपयोगिताओं के स्तरों व प्रकारों, प्रलेखों के स्थान पर और आन्तरिक तथा बाहृय दोनों प्रकार के उपयोगकर्ताओं को सूचना सेवा प्रदान करने में भिन्न हैं, ये न केवल सूचना का संग्रह, प्रसंस्करण और उसको प्रदान करते हैं, अपितु सूचना का विश्लेषण तथा प्रदर्शन भी करते है।

इनमें मुख्य भिन्नता यह है कि ग्रंथालय केवल प्रलेख प्रदान करते हैं जबकि सूचना/प्रलेखन केन्द्र न केवल प्रलेख का पता प्रदान करते हैं, अपितु प्रलेखों में से उचित सूचना प्रदान करते हैं।

**गतिविधि 2.1 :** किसी विशिष्ट ग्रंथालय, सूचना एवं प्रलेखन केन्द्र जाकर इनमें किए जाने वाले कार्यो में से प्रत्येक पर 100 शब्दों का लेख लिखिए।

### पाठगत प्रश्न 2.3

**सही विकल्प चुनें :**

1. निम्न में से कौन सूचना केन्द्र का प्रकार नहीं है?
   - अ) संग्रहालय
   - ब) सूचना विश्लेषण केन्द्र
   - स) क्लियरिंग हाउस
   - ङ) डाटा बैंक
2. प्रलेखन केन्द्र प्रदान करता है:
   - अ) केवल प्रलेखों का पता।

टिप्पणी

ब) प्रलेखों का पता और उसमें छपी विस्तृत सूचना।

स) पाठकों को समष्टि प्रलेख

ङ) घर पर पढ़ने के लिए पुस्तक।

## 2.5 प्रलेखन/सूचना केन्द्रों के कार्य

प्रलेखन/सूचना केन्द्र समाष्टि और व्यष्टि प्रलेखों के सूचना कथ्य को दक्ष पाठकों तक पहुँचाने में विश्वास रखते हैं ये केन्द्र सही समय पर सही सूचना के प्रति सही पाठकों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए बहुत-से कार्य करते है।

1) विभिन्न प्रकार की सामग्री द्वारा सूचना की संपूर्ण खोज करते हैं।
2) ये केन्द्र नवीन के साथ-साथ पुराने साहित्य में से प्रलेखों/सूचना की पहचान करते हैं।
3) ये केन्द्र पाठकों की माँग के अनुसार उपयोगी सूचना संग्रहीत करते हैं।
4) ये अधिग्रहीत सूचना का प्रसंस्करण करके सार तत्व और अनुक्रमणिका तैयार करते हैं।
5) सूचना का उपयुक्त तरीके से भंडारण करते हैं।
6) पाठकों की माँग पर सूचना का प्रसार करते हैं।

## 2.6 प्रलेखन/सूचना केन्द्रों की सेवाएँ

प्रलेखन/सूचना केन्द्रों के सभी कार्य विभिन्न प्रकार की सेवाओं को प्रदान करने के लिए ही किए जाते हैं। ये सेवाएँ या तो पाठको के माँगने पर या माँग किए जाने की प्रत्याशा में प्रदान की जाती हैं। प्रत्युत्तरात्मक सेवा, पाठकों की विशिष्ट माँग पर दी जाती है। दूसरी ओर पूर्वानुमानित सेवा पाठकों की माँग की प्रत्याशा में दी जाती है।

प्रलेखन/सूचना केन्द्रों द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न प्रत्युत्तरात्मक और पूर्वानुमानित सेवाएँ हैं:

1) प्रत्युत्तरात्मक सेवाएँ

   क) प्रश्नों के उत्तर देना

   ख) रेफैरल सेवाएँ

   ग) ग्रंथसूची निर्माण

   घ) पूर्वव्यापी खोज सेवा

   ङ) प्रलेख बैकअप सेवा

   च) अनुवाद सेवा

टिप्पणी

2) पूर्वानुमानित सेवाएँ

(i) समसामयिक जागरूता सेवा (सी.ए.एस)

(ii) चयनित सूचना प्रसार (एस.डी.आई.) सेवा

(iii) अनुक्रमणिका का निर्माण और सारकरण

(iv) निर्देशपुस्तिका, हस्तपुस्तिका आदि का निर्माण

(v) तदर्थ ग्रंथसूची निर्माण।

(vi) यथा-वस्तु स्थिति प्रतिवेदन।

### पाठगत प्रश्न 2.4

**सत्य या असत्य बताएँ :**

1. समसामयिक जागरूकता सेवा एक पूर्वानुमानित सेवा है।
2. क्षेत्रीय सेवा एक प्रत्युत्तरात्मक सेवा है।
3. यथा-वस्तु-स्थिति प्रतिवेदन एक प्रत्युत्तरात्मक सेवा है।
4. अनुवाद सेवा पूर्वानुमानित सेवा है।
5. ग्रंथसूची निर्माण एक प्रत्युत्तरात्मक सेवा है।

## 2.7 प्रलेखन/सूचना केन्द्रों के प्रकार

प्रलेखन/सूचना केन्द्रों को तीन मुख्य श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। जैसे

1) **स्वामित्व द्वारा,** इसका तात्पर्य उन केन्द्रों से है जो सरकारी एजेंसी, शिक्षित समितियों या वाणिज्यिक संस्थाओं या किसी निजी एजेंसी के स्वामित्व में आती हों।

2) **विशेष रुचि द्वारा,** वे केन्द्र जो विभिन्न विषय क्षेत्र में शोध के लिए, मिशन उन्मुख परियोजनाओं के लिए और उन पाठकों के लिए, जो विशेष सामग्री में रुचि रखते हों, को सेवा प्रदान करते हैं।

3) **विभिन्न स्तरों द्वारा;** वे केन्द्र जो अंतराष्ट्रीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या स्थानीय स्तरों पर चलाए जाते हैं।

ऊपर वर्णित केन्द्रों के उदाहरण नीचे दिए गए है।

### 1) स्वामित्व द्वारा

इस श्रेणी के केन्द्रों में वे केन्द्र आते हैं जो सरकारी या गैर सरकारी एजेंसी प्रबुद्ध, समितियों, व्यावसायिक संघों संस्थाओं या निजी एजेंसियो द्वारा स्वामित्व, व्यवस्थापित और वित्त पोषित होते हैं।

टिप्पणी

**(i) सरकारी सूचना केन्द्र**

- नेशनल इन्फोर्मेटिक्स सेंटर (एन.आई.सी) नई दिल्ली।
- नेशनल सोशल सांइस डाक्यूमेंटेशन सेंटर (नेसडॉक) नई दिल्ली।

**(ii) अर्द्ध-सरकारी सूचना केन्द्र**

- सूचना सेंटर फॉर आयरन एण्ड स्टील, स्टील ऑथारिटी ऑफ इडिया (एस.ए. आई.एल) शोध एवं विकास केन्द्र, राँची।
- नेशनल इन्फोर्मेशन सेंटर फॉर टेक्सटाइल एण्ड एलाइड सब्जेक्ट (निकटास) अहमदाबाद

**(iii) गैर-सरकारी संस्था (एन.जी.ओ) सूचना केन्द्र**

- एशिया रीजनल इन्फोर्मेशन सेंटर (ए.आर.आई.सी.) एशियन डेवेलेपमेंट बैंक (ए.डी.बी.) मनीला, फीलीपींस।
- इंटरनेशनल डेवेलपमेंट रिसर्च सेंटर (आई.डी.आर.सी.) ग्रंथालय, कनाडा।

**(iv) निजी सूचना केन्द्र**

- डाक्यूमेंटेशन एण्ड इंर्फोमेशन सेंटर, द एर्नेजी रिसर्च इंस्टीट्यूट ग्रंथालय, (टी.ई. आर.आई. नई दिल्ली।

**(v) अंतर्राष्ट्रीय सूचना केन्द्र**

- इंटरनेशनल पेटेंट डॉक्यूमेंटेशन सेंटर (आई.एन.पी.एडी.ओ.सी.) यूरोपियन पेटेंट ऑफिस, मयूनिख
- ट्रेड इंर्फोमेशन सर्विसेस, इंटरनेशनल ट्रेड सेंटर (यू.एन.सी.टी.ए.डी/डब्लू.टी.ओ.) जेनेवा।

**2 ) विशेष रूचि द्वारा**

इस श्रेणी में वे केन्द्र आते हैं जो विभिन्न विषय क्षेत्र में शोध के लिए, मिशन उन्मुख परियोजनाओं के लिए और विशेष पाठकों के लिए सूचना सेवा प्रदान करते हैं। ये केन्द्र विशिष्ट क्षेत्रों की सूचना भी प्रदान करते हैं।

**(i) विषय-क्षेत्र**

- विज्ञान एवं तकनीकी–नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सांइस कम्यूनिकेशन एण्ड इंर्फोमेशन रिर्सोसेस (निस्केयर) पूर्व में इंडीयन नेशनल साइंटिफिक डाक्यूमेंटेशन सेंटर (इंस्डोक), नई दिल्ली
- सामाजिक विज्ञान–नेशनल सोशल–साइंस डॉक्यूमेंटेशन सेंटर (नेसडॉक) नई दिल्ली।

टिप्पणी

**(ii) मिशन उन्मुख**

- कृषि-ऐग्रीकल्चर रिसर्च इंर्फोमेशन सेंटर, राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
- डिफेंस साइटिफिक इंर्फोमेशन एण्ड डॉक्यूमेंटेशन सेंटर (डेसीडॉक), दिल्ली।

**(iii) सामग्री के प्रकार**

- यूरोपियन अनुवाद केन्द्र, डेल्ट, नीदरलेण्ड
- पेटेंट सूचना व्यवस्था, नागपुर

**(iv) सूचनाओं के प्रकार**

- औद्योगिक सूचना-निस्केयर, नई दिल्ली ओर नेसडॉक, नई दिल्ली।
- ग्रंथसूची सूचना- स्मॉल एंटरप्राइसेस नेशनल डॉक्यूमेंटेशन सेंटर (सेनडॉक), हैदराबाद।

## 3. सेवाओं के विभिन्न स्तरों द्वारा

बहुत से सूचना केन्द्र विभिन्न स्तरों पर चलाए जा रहे हैं जैसे- वैश्विक, अंतर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय।

(i) **वैश्विक सूचना केन्द्र**-इन सूचना केन्द्रों में, दुनिया भर से सूचना का विकेन्द्रीकृत इनपुट लिया जाता है, किन्तु उस सूचना का व्यवस्थापन केन्द्रीकृत होता है, साथ ही उसको विकेन्द्रीकृत रूप से ही प्रदान किया जाता है।

- एग्रीकल्चर इन्फोंमेशन सिस्टम, एफ.ए.ओ (एग्रीस), रोम।
- डेवलेपमेंट साइंस इन्फोंमेशन सिस्टम (देवासीस), आई.डी.आर.सी. कनाडा।

(ii) **अंतराष्ट्रीय सूचना/डाटाबेस केन्द्र**- ये केन्द्र किसी विषय क्षेत्र के ग्रंथात्मक डाटाबेस रखते हैं और पूरी दुनिया के पाठको को ऑनलाइन माध्यम से नवीन और पुरानी खोज उपलब्ध कराते हैं।

- डी.आई.ए.एल.ओ.जी. (डायलोग) - ऑनलाइन इन्फोंमेशन रिटरीवल सिस्टम, लोकहीड, यू.एस.ए. (इसे अभी नाइट राइडर इन्फोंमेशन सर्विसेज से जाना जाता है क्योंकि डॉयलोग नाम काफी बाद अपनाया गया।)
- इंटरनेशनल पेटेन्ट डाक्यूमेंटेशन सेंटर (इनपाडॉंक) वियना।
- मेडलाइन, नेशनल मेडिकल लाइब्रेरी, बेथेसडा, मेरीलेण्ड, यू.एस.ए।

**(iii) राष्ट्रीय सूचना केन्द्र/राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र**

- ये केन्द्र राष्ट्रीय स्तर पर कार्य और सेवाएँ प्रदान करते हैं और अपने विस्तृत क्षेत्र के कारण व्यापक होते हैं।
- इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नीकल इन्फोरमेशन, बीजिंग चाईना।

- इंस्टीट्यूट ऑफ सांइटिफिक एण्ड टेक्नीकल डाक्यूमेंटेशन सेंटर (बेसडॉक) ढाका, बांग्लादेश।

**(iv) क्षेत्रीय सूचना केन्द्र**-आजकल, बहुत से क्षेत्रीय सूचना नेटवर्क सामने आये हैं, जो समान भौगोलिक क्षेत्र वाले देशों के सहयोग से चलाए जा रहे हैं।

- कॉमनवेल्थ रीजनल एनर्जी रिर्सोसेज इन्फोंमेशन सर्विसेज, मेलबर्न, आस्ट्रेलिया।

**(v) स्थानीय सूचना केन्द्र**

- बिजनेस इन्फोंशन केन्द्र, ट्रांसपोर्ट कोंपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटिड, गुड़गांव, इंडिया।
- बायोटेक्नॉलोजी इन्फोंमेशन केन्द्र, सेंटर ऑफ एडवांस स्टडी इन मरीन बायोलॉजी, अन्नामलाइ विश्वविद्यालय, पारंत्रिपेट्टी, तमिलनाडु।

## पाठगत प्रश्न 2.5

**रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :**

1. डॉक्यूमेटेशन एण्ड इंर्फोमेशन सेंटर, एनर्जी रीसर्च इंस्टीट्यूट ग्रंथालय (टी.ई.आर. आई.)............................सूचना केन्द्र का उदाहरण है।
2. नेशनल इंर्फोमेटिक्स सेंटर (एन.आई.सी.) नई दिल्ली............................सूचना केन्द्र का उदाहरण है।

## 2.8 डिजिटल और वर्चुअल ग्रंथालय

आज के ग्रंथालय पुस्तकों, पत्रिकाओं और समाचारपत्रों के भण्डारण से कुछ अधिक हैं। वर्तमान ग्रंथालयों में मुद्रित संसाधनों के अतिरिक्त, ई-संसाधनों, श्रव्य/दृश्य सामग्री, मल्टीमीडिया सामग्री और अन्य संसाधनो का अधिग्रहण उपयोक्ताओं की माँग के अनुसार होता है। यह परिवर्तन सभी प्रकार के ग्रंथालयों में स्पष्ट दिखाई देता है। हालाँकि एक चीज़ जो नहीं बदली है वह है विश्व ज्ञान या सूचनाएँ जो हमेशा तीव्र गति से निरंतर बढ़ रही हैं। डिजिटल और वर्चुअल ग्रन्थालय इस गति के ही परिणाम हैं। इलेक्ट्रोनिक ग्रंथालय, डिजिटल ग्रंथालय और वर्चुअल ग्रंथालय शब्द एक-दूसरे के पर्याय के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। इलेक्ट्रोनिक ग्रंथालय में ई-संसाधनों के साथ-साथ मुद्रित संसाधन भी हो सकते हैं किन्तु वर्चुअल ग्रंथालय तक केवल इंटरनेट के माध्यम से ही पहुँचा जा सकता है। पूरे संसार में लैन, वैन और वर्ल्ड वाइड वेब (www) के माध्यम से ग्रंथालय तक पहुँचा जा सकता है।

### 2.8.1 डिजिटल ग्रंथालय

डिजिटल ग्रंथालय की अनेक परिभाषाएँ है, सरल शब्दों में डिजिटल ग्रंथालय ऐसा ग्रंथालय है जिसमें संग्रहो का भंडारण डिजिटल या इलेक्ट्रोनिक प्रारूप में होता है और इनका अभिगम इलेक्ट्रानिक उपकरणों व कंप्यूटर के माध्यम से किया जा सकता है। अन्य शब्दों में,

टिप्पणी

डिजिटल ग्रंथालयों में प्रलेखों का भंडारण व्यवस्थित इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में होता है एवं इंटरनेट या सीडी रोम (कॉम्पैक्ट डिस्क रीड ओनली मेमोरी) डिस्क के माध्यम से इनका अभिगम किया जा सकता है। विशिष्ट ग्रंथालय की प्रकृति के आधार पर उपयोक्ता कंप्यूटर का उपयोग करके पत्रिका लेखों, पुस्तकों, चित्रों, ध्वनि फाइलों, पत्रों और वीडियो का अभिगम कर सकता है। डिजिटल ग्रंथालय, पारंपरिक ग्रंथालयों की तरह ही संग्रह का चयन अधिग्रहण, उनकी उपलब्धता और उनका संरक्षण करते हैं इनमें प्रमुख अन्तर यह है कि डिजिटल ग्रंथालयों में संसाधन केवल मशीन से पठनीय रूप में उपलब्ध होते हैं। इसका अभिप्राय है कि परंपरागत संग्रहण की अवधारणा को संशोधित किया जाए ताकि उसमें इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्राप्त सामग्री भी शामिल करके उन्हें उपलब्ध कराया जा सके। डिजिटल ग्रंथालय में लोगों की विभिन्न प्रकार की सामाजिक व संगठनात्मक दृष्टि से उपयोगी सूचना व ज्ञान से संबंधित आकड़ों को मल्टीमीडिया डेटा में सूचना प्रबंधन के तरीकों का उपयोग करके रखा जाता है। इस प्रकार यह भण्डार, परम्परागत ग्रंथालय की तरह उपयोक्ता समुदाय की सेवा करता है। डिजिटल ग्रंथालय के सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक है भारत का डिजिटल ग्रंथालय (डी.एल.आई.)। भारत का डिजिटल ग्रंथालय (डी.एल.आई.) भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का एक प्रमुख ग्रंथालय है जो इंटरनेट पर सभी के लिए उपलब्ध हैं। इसमें पुस्तकें खोज योग्य है व मुफ्त पढ़ने के लिए उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त यह छह भारतीय समाचारपत्रों–टाइम्स ऑफ इंडिया, द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, डेक्कन हेराल्ड के ऑनलाइन लिंक प्रदान करता है।

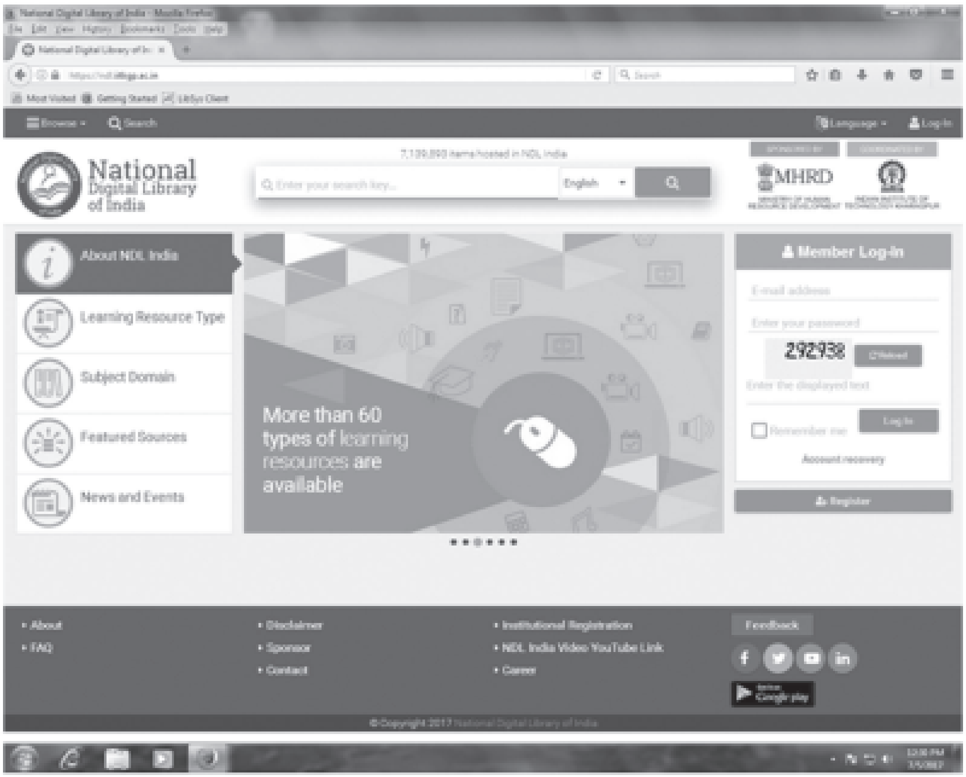


(चित्र 1.1 : भारत के डिजिटल ग्रंथालय का स्नेपशाट)

**उदाहरण :**

(i) पारंपरिक ज्ञान डिजिटल ग्रंथालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार http://www.tkdl.res.in/tkdl/langdefault/common/home/asp?GL=ENG

(ii) भारत का डिजिटल ग्रंथालय http://www.dli.ernet.in

(iii) इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, डिजिटल ग्रंथालय, नई दिल्ली (IGNCA) http://www.ignca.nic.in/dgt.000/html

(iv) विद्यानिधि: ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान विभाग का डिजिटल ग्रंथालय मैसूर, विश्वविद्यालय, मैसूर http://www.vidyanidhi.org.in/home/index.html

## पारंपरिक ग्रंथालय की तुलना में डिजिटल ग्रंथालयों का लाभ

तेज़ गति और कम लागत के कारण लाखों संसाधन डिजिटाइज किए जाते है। डिजिटल ग्रंथालयों के कई लाभ हैं। जो निम्न हैं:

- कैटलॉग या अलमारियों में खोजने के तुलना में, पुस्तकों, अभिलेखों और चित्रों आदि संसाधनों को कंप्यूटर/इंटरनेट की सहायता से सुविधापूर्वक अभिगम किया जा सकता है।

- यह ग्रंथालय बहुत अधिक सूचना को समाहित करने में दक्ष है क्योंकि डिजिटल ग्रंथालय में रैक्स या केबिनेट की तुलना में कम स्थान में अधिक सूचना आ सकती है।

- डिजिटल ग्रंथालय के रख-रखाव की लागत पारंपरिक ग्रंथालयों से बहुत कम होती है।

- पारंपरिक ग्रंथालय कर्मचारियों के वेतन, पुस्तकों के रख-रखाव, इमारत और उपकरण, आदि पर बहुत बड़ी रकम खर्च करते हैं जबकि डिजिटल ग्रंथालयें में ऐसा नही होता।

- दोनों प्रकार के ग्रंथालयों में सरलता से सूचना प्राप्ति के लिए प्रसूचीकरण की आवश्यकता होती है। डिजिटल ग्रंथालयों ने अपने इलेक्ट्रोनिक डाटाबेस के अधिगम के लिए नई-नई तकनीकें अपना ली हैं, जबकि दूसरे ग्रंथालय ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटालॉग (औपेक) तक पहुँचाना ही काफी समझते हैं।

- इसकी कोई भोगौलिक सीमा नहीं होती है। बगैर ग्रंथालय जाए ही डिजिटल ग्रंथालय तक पहुँचा जा सकता है। डिजिटल ग्रंथालय पाठकों को विभिन्न भौगोलिक स्थानों से अभिगम कराता है।

- पारंपरिक ग्रंथालयों से भिन्न, ये ग्रंथालय किसी भी समय, किसी भी स्थान से इंटरनेट के माध्यम से अभिगम किए जा सकते है। एक सूचना, एक साथ कई सदस्यों और संस्थानों द्वारा प्रयोग की जा सकती है।

टिप्पणी

टिप्पणी

## डिजिटल ग्रंथालयों के विकास में आने वाली चुनौतियाँ

डिजिटल ग्रंथालय स्थापित करने में ग्रंथालयाध्यक्षों के सामने निम्नलिखित चुनौतियाँ आती हैं।

- कम से कम पैसों में तकनीकें जैसे कि सर्वर, पी.सी., स्कैनिंग सॉफ्टवेयर, स्टोरेज सिस्टम, इंटरनेट। डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू सेवा, लैन/वैन, प्रिंटर आदि का इंतज़ाम करना।
- पुराने व नए कर्मचारियों को नई तकनीकें चलाने के लिए ट्रेनिंग देना व नियमित अंतराल पर इस प्रशिक्षण को देते रहना।
- डिजिटाइजेशन सॉफ्टवेयर का प्रयोग करके सूचना को पेपर से इलेक्ट्रोनिक रूप में बदलना।
- सूचना के प्रसार के लिए, इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन की प्रक्रिया, विकास, संरक्षण, व्यवस्थापन आदि से परिचित होना।
- बाज़ार में उपलब्ध नई तकनीकों, डाटाबेसों से खुद को अवगत रखना।
- डिजिटाइज सूचना को एक सही डाटा ढाँचे में ढालना इस बात का ध्यान रखते हुए कि उस सूचना का प्रदर्शन सही रूप से हो, और उसका अभिगम आसानी से किया जा सके।
- इलेक्ट्रॉनिक सूचना का उचित संरक्षण और उसकी कड़ी सुरक्षा रखना।
- प्रलेखों को डिजिटाइज करते समय कॉपीराइट एक्ट के अनुसार उसके नियमों का उल्लघन न करते हुए कानूनी अनुमति लेना।

## डिजिटल ग्रंथालयों की समस्याएँ

डिजिटल ग्रंथालयों को विकसित करते समय ग्रंथालयाध्यक्षों के सामने कई समस्याएँ आती हैं। वे हैं:-

- उपयुक्त आधारिक संरचना का उपलब्ध ना होना।
- वित्तीय समस्या
- सूचना प्रोद्योगिकी पर्यावरण को विकसित करने में प्रयोग होने वाली जानकारी का अभाव।
- हार्डवेयर और साफ्टवेयर की तकनीक का जल्दी पुराना हो जाना।
- नई तकनीकें अपनाने में कर्मचारियों का जल्दी से तैयार न होना।
- प्रेरित एवं प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी
- आधारिक संरचना व निधि आदि सेवाएँ देने में प्राधिकारियों की उदासीनता।

## डिजिटल ग्रंथालयों की सेवाएँ

डिजिटल ग्रंथालय अपने पाठकों को बहुत सी सेवाएँ प्रदान करे हैं। वे हैं:-

टिप्पणी

- **ई-मेल का अभिगम :-** ये एक ऐसी व्यापक प्रयोग वाली सेवा है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति या एक समूह में संचरण हो सकता है।
- **वर्ल्ड वाइड वेब से खोज:** किसी भी विषय की सूचना के लिए इंटरनेट से खोज करने की सेवा।
- **स्वचलित वेब खोज:** यह एक ऐसी खर्च इंजन सेवा है जिसके द्वारा दूर-दराज़ के कम्पयूटरों से भी सूचना का अधिगम किया जा सकता है।
- **ऑडियो-वीडियो कान्फ्रेसिंग** - इंटरनेट के माध्यम से दो या दो से अधिक सदस्यों के बीच आमने-सामने बातचीत करना।
- **फाइल अन्तरण प्रोटोकोल (एफ.टी.पी.) :** यह उपयोगकर्ता को इंटरनेट के माध्यम से एक कम्पयूटर से दूसरे कम्पयूटर तक डाटा फाइल पहुँचाने की अनुमति प्रदान करता है।
- **बुलेटिन बॉर्ड सेवा** - यह एक समाचार वाचक सॉफ्टवेयर होता है, जो एक व्यक्ति को खबर पढ़ने बनाने व किसी समूह में संदेश भेजने के लिए सक्षम करता है।

**गतिविधि 2.2 :** अपने किसी प्रश्न की सूचना पाने के लिए किसी डिजिटल ग्रंथालय जाइये।

## पाठगत प्रश्न 2.6

**निम्नलिखित का मिलान करें :**

| | |
|---|---|
| (अ) डिजिटल ग्रंथालय | i) मुद्रित पुस्तकें |
| (ब) वर्चुअल ग्रंथालय | ii) डिजिटल संग्रह |
| (स) इलेक्ट्रॉनिक ग्रंथालय | iii) मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक रूप में सामग्री। |
| (द) पारंपरिक ग्रंथालय | iv) इंटरनेट के द्वारा अभिगम |
| | v) वाणिज्यिक डाटाबेस। |

## आपने क्या सीखा

- ग्रंथालय विभिन्न प्रकार की सामग्री के संग्रह, व्यवस्थापन व विभिन्न पाठकों तक उसके प्रसार में विशेषता रखती है।
- विशेष पाठकों की विशेष सूचना आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय के साथ प्रलेखन/सूचना केन्द्रों का विकास हुआ।
- ग्रंथालय केवल प्रलेखों का पता बताता है जबकि प्रलेखन/सूचना केन्द्र न केवल प्रलेख का पता बताता है बल्कि उस प्रलेख से उचित सूचना भी प्रदान करता है।

टिप्पणी

- डिजिटल ग्रंथालय ऐसा ग्रंथालय है जिसमें संग्रह को डिजिटल रूप में देखा जाता है तथा उसका अभिगम कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाता है।
- वर्चुअल ग्रंथालय इंटरनेट के माध्यम से सूचना प्रदान करने में विशेषता रखते हैं।

## पाठांत प्रश्न

1. सूचना/प्रलेखन केन्द्र और ग्रंथालय में अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. डिजिटल ग्रंथालय के क्या लाभ हैं?
3. डिजिटल/वर्चुअल ग्रंथालयों द्वारा दी जाने वाली सेवाएँ क्या हैं?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

**2.1**

1. क्लोज ऐक्सेस सिस्टम
2. मैप (नक्शा), ग्लोब, पोस्टर, चित्र इत्यादि। (पाठक किसी एक का प्रयोग कर सकता है)
3. ऑपन एक्सेस सिस्टम
4. नॉन-बुक सामग्री

**2.2**

(अ) (iv)

(ब) (iii)

(स) (i)

(द) (ii)

**2.3**

1. (अ)
2. (ब)

**2.4**

1. सही

टिप्पणी

2. सही
3. गलत
4. गलत
5. सही

**2.5**

1. निजी
2. सरकारी
3. वैश्विक

**2.6**

(अ) (ii)

(ब) (iv)

(स) (iii)

(द) (i)

## शब्द

इस पाठ में प्रयुक्त शब्द जिनको और व्याख्या की आवश्यकता है वे नीचे दिये गए हैं। शिक्षार्थियों से अपेक्षा है कि वे इनकी व्याख्या करें।

**सारकरण :**

**समसामयिक जागरूकता सेवा (सी.ए.एस.) :**

**डिजीटल ग्रंथालय :**

**प्रलेखन केन्द्र :**

**इलेक्ट्रोनिक ग्रंथालय :**

**सूचना केन्द्र :**

टिप्पणी

**सूचना सेवाएँ :**

**अभिसारकरण समसामयिकी :**

**लैन :**

**चयनित सूचना प्रसार ( एस.डी.आई. ) :**

**विशेष ग्रंथालय :**

**वर्चुअल ग्रंथालय :**

**वैन:**